Geography

(B)* भूगोल की व्याख्या एक पारिस्थितिकी विज्ञान के रूप में कीजिए।

Ans => प्राकृतिक के मध्य दोष उत्पन्न होने लगा था इस दोष को दूर करने के लिए पारिस्थितिकी विज्ञान का सहारा लिया गया। प्राकृतिक परिवेश संतुलन बनाये रखना ही आज की सबसे जटिल समस्या है मानव समुदाय अपने विकास से चर्म सीमा तक पहुंचने के लिए प्राकृतिक स्वरूप को ही समाप्त कर देता है। प्राकृतिक संतुलन को पुनः स्थापित करने के लिए, विश्व के सभी सम्भागों में प्रकृति प्रेमियों एवं वैज्ञानिकों ने तथा विज्ञान सम्मत तकनीक के आधार पर नये शिरे से पुनः प्रयास किये है। पारिस्थितिकी के स्वरूप को विकसित करने का मूल आधारभूत तथ्य है कि मनुष्य प्रकृति की ममतामयी छत्रछाया में अपना परिवेश कर सके।

Ecology (पारिस्थितिकी)

= OIKOS + LOgos से बना है

OIKOS का अर्थ आवास होता है

Logos का अर्थ अध्ययन होता है

-> Ecology शब्द का प्रयोग प्रथम बार 1859 में Hildwine के द्वारा किया गया था

-> रिटर महोदय ने Ecology के जगह OIE-KOLOGY का प्रयोग 1868 में किये थे

विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग तरीकों से परिभाषित किया है।

(i) Oickologie is the study of organisms in relation to the environment Warming 1985

(ii) It is the study of structure and function of future P. Odum (1963)

पारिस्थितिकी के अंतर्गत मानव, जैव-जगत एवं प्रकृति द्वारा निर्मित सह-सम्बंधित परिवेश एवं स्वतंत्र प्रकृति परिवेश के मध्य स्वस्थ एवं अनुकूल सामंजस्य कैसे स्थापित हो।

पारिस्थितिकी के अंतर्गत प्राकृतिक क्रियाओं से एवं मानव रचित पृष्ठभूमि के अन्तर्गत जो बहुरूपीय व अन्तरसंबंध एवं जटिल परिवेश निर्मित होता है उसी का अध्ययन किया जाता है।

=> <u>पारिस्थितिकी का इतिहास</u>:-

पारिस्थितिकी चिन्तन मानव इतिहास से प्रारम्भ हो गया था। मेसोपोटामिया एवं मिस्र की प्राचीन सभ्यताओं में नदियों, नहर प्रणाली एवं वृक्षों को देवताओं की तरह पवित्र मान कर पूजा जाता था। भारत के प्राचीन ग्रंथ में भी इसकी व्याख्या है प्राकृतिक परिवेश में स्वच्छ बनाने मे वनस्पति जगत का महत्वपूर्ण भूमिका होता है

2020-

⇒ पारिस्थितिकी अध्ययन की आवश्यकता:-

स्वरूप का प्राकृतिक परिवेश का आधारभूत निर्माण पेड़-पौधों द्वारा निर्धारित होता है पर्यावरण को संतुलित रखने में पेड़-पौधों का महत्वपूर्ण भूमिका होता है। वृहत पैमान पर अगर वृक्ष को काट दिया जाए तो वायुमंडल में CO_2 की मात्रा तीव्र गति से बढ़ेगा तथा O_2 की मात्रा घटने लगेगा। वर्षा काल में अत्यधिक मिट्टी का अपरदन गति से होने लगता है जिसके कारण वह क्षेत्र बंजर भूमि में तब्दील हो जाता है। इसका प्रभाव मिट्टी के जीव एवं जीवाणु छोटा पौधा, जल, वायु, भू-जल, पशु-पक्षी आदि पर पड़ता है।

⇒ पारिस्थितिकी का उप-विभाजन:-

वर्तमान में पारिस्थितिकी का अध्ययन पर्यावरण व जीवों के संबंधों की गतिशीलता, जीवों के समुदाय व समुच्चय एवं विकास की स्थिति एवं परिवर्तन को विस्तार से समझने के लिए पारिस्थितिकी को तीन उप भाग में विभाजित किया गया है।

(i) आवासीय पारिस्थितिकी
(ii) स्वपारिस्थितिकी
(iii) समपारिस्थितिकी

(i) आवासीय पारिस्थितिकी:- इसके अंतर्गत प्रदेश विशेष का पशु या जीवों के आवास की विशेष स्थिति को ध्यान में रखते हुए

विभिन्न आवासों के समूहों में विभाजित किया जाता है जैसे - गंगा के डेल्टा व गंगासागर के जैव - संसार, थार प्रदेश का जैव जगत, तटीय प्रदेशों का जीव - स्वरूप, पश्चिमी हिमालय में ऊँचाई के अनुसार जीवों एवं वनस्पति का विन्यास व उनका परिवेश आदि। आवास के कारण इसे आवासीय पारिस्थितिकी कहते हैं।

(ii) स्वपारिस्थितिकी :— पारिस्थितिकी चिंतन में जीवों की आवश्यकता, एवं प्रतिक्रियाएँ एवं परिवेश के प्रभाव को अधिक महत्व दिया जाता है जीव विशेष के स्वांग के विकास की पारिस्थिकी एवं उसका परिवेश सह - संबंध स्वपारिस्थितिकी में महत्वपूर्ण बन जाता है।

(iii) समपारिस्थितिकी :— इसमें जटिल रूप से अन्तःनिर्भर जीव जो कि सहचर्य में या सम समुदाय में रहना पसंद करते हैं उनका वर्णन एवं उनके परिवेश का वर्णन होता है इसमें जीव समुदाय को महत्व दिया जाता है इन पर प्रकृति व परिवेश का प्रभाव भी विविध व बहुरूपी होने से जटिल हो गया है इसमें सम्पूर्ण समुदाय के जीव एक दूसरे को प्रभावित करता है एवं एक दूसरे पर निर्भर होता है।

पारिस्थितिकी की शाखाएँ :-

पारिस्थितिकी अध्ययन

2020-7-12 21

तीव्र गति से व्यापक बनते जा रहा है विशिष्टताओं एवं दृष्टिकोण के आधार पर विज्ञान को अनेक शाखाओं एवं उपशाखाओं में विभाजित किया गया है। वर्तमान समय में व्यावहारिक पारिस्थितिकी का महत्व बहुत अधिक हो गया है।

पारिस्थितिकी की महत्वपूर्ण शाखाएँ निम्न प्रकार हैं—

(I) वनस्पति भूगोल
(II) जीव-जंतु भूगोल
(III) प्राचीन पारिस्थितिकी
(IV) विश्वव्यापी पारिस्थितिकी, जीवों, घास मैदान, वनस्थली क्षेत्र
(V) मीठे जल का पारिस्थितिकी
(VI) महासागरीय पारिस्थितिकी
(VII) तटीय पारिस्थितिकी
(VIII) जीन / वंश पारिस्थितिकी
(IX) वायुमंडल पारिस्थितिकी
(X) अणु जैविक पारिस्थितिकी
(XI) सांख्यिकी पारिस्थितिकी
(XII) उत्पादकता पारिस्थितिकी
(XIII) ऊर्जा पारिस्थितिकी
(XIV) व्यावहारिक पारिस्थितिकी
(XV) संरक्षण एवं संरक्षण पारिस्थितिकी
(XVI) मानव पारिस्थितिकी
(XVII) प्रदूषण पारिस्थितिकी

जैव भूगोल को पारिस्थितिकी का आधार माना जाता है।

2020-7-12 21:2